Durga Mahavidyalaya, Raipur

TOPIC - CONCEPT OF CONSUMPTION (उपभोग की अवधारणा)

CLASS – B. A. 1ST SEMESTER

AYSHA PARVEEN

ASSISTANT PROFESSOR

ECONOMICS DEPARTMENT

उपभोग की अवधारणा का अर्थ:-

- उपभोग की अवधारणा अर्थशास्त्र में एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है जिसका संबंध किसी वस्तु या सेवा का उपभोग करने से है उपभोग का उद्देश्य उन वस्तुओं और सेवाओं से संतुष्टि प्राप्त करना है जो किसी व्यक्ति या समाज की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करती है। इसे हम आमतौर पर किसी वस्तु के उपयोग करने की क्रिया के रूप में समझ सकते हैं जैसे खाना कपड़े पहनना या कोई मनोरंजन गतिविधि करना उपभोग वह अंतिम चरण होता है जिसमें उत्पादन किए गए माल और सेवाओं का उपयोग होता है यह किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए जरूरी है क्योंकि उपभोग के बाद ही उत्पादन का उद्देश्य पूरा होता है।

<u>उपभोग की प्रमुख विशेषताएं :-</u>

- आवश्यकता की पूर्ति- उपभोग का मुख्य मुख्य उद्देश्य व्यक्ति की भौतिक मानसिक और सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करना है यह किसी वस्तु की उपयोगिता से जुड़ा होता है
- प्रेरणा- उपभोग व्यक्ति की इच्छाओं और आवश्यकताओं से प्रेरित होता है यह न केवल भौतिक जरूरत को बल्कि मानसिक और सामाजिक आवश्यकताओं को भी पूरा करता है

उपभोग के प्रकार-

- वस्तु उपभोग- इसमें उन भौतिक वस्तुओं का उपभोग शामिल होता है जो आसानी से देखा जा सकता है जैसे कपड़े, भजन ,गाड़ी आदि यह वस्तुएं निश्चित रूप से सीमित होती है और एक बार उपयोग के बाद समाप्त हो जाती है
- सेवा उपभोग- इसमें उन सेवाओं का उपयोग शामिल होता है जो भौतिक रूप से अस्तित्व में होती है लेकिन जो एक अनुभव या सुविधा प्रदान करती है जैसे स्वास्थ्य, सेवाएं, शिक्षा, परिवहन सेवाएं आदि इनका उपभोग सीधे अनुभव किया जाता है लेकिन यह वस्तु की तरह समाप्त नहीं होती क्योंकि यह एक

उपभोग के विभिन्न दृष्टिकोण:-

- व्यक्तिगत उपभोग- यह उसे उपभोग को दर्शाता है जो एक व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत जरूरत और इच्छाओं को पूरा करने के लिए करता है इसमें कोई व्यक्ति अपनी आय के आधार पर वस्तुओं और सेवाओं का चयन करता है
- सामूहिक उपभोग- यह उपभोग के उस रुप को दर्शाता है जो एक समूह या समुदाय द्वारा किया जाता है जैसे सार्वजनिक सेवाएं, स्वास्थ्य, देखभाल , शिक्षा आदि यह सामाजिक कल्याण और जीवन स्तर को प्रभावित करता

उपभोग का महत्व:-

- मांग और आपूर्ति का संतुलन:- उपभोग और उत्पादन के बीच संतुलन बनाए रखना आर्थिक स्थिरता के लिए जरूरी होता है जब उपभोग बढ़ता है तो आपूर्ति को बढ़ाने की आवश्यकता होती है जिससे उत्पादन बढ़ता है और अर्थव्यवस्था का विकास होता है
- आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देना –उपभोग आर्थिक गतिविधियों को संचालित करने में अहम भूमिका निभाता है उपभोग बढ़ने से उत्पादन में वृद्धि होती है जिससे रोजगार के अवसर पैदा होते हैं और अर्थव्यवस्था में गति आती है
- जीवन स्तर में सुधार-उपभोग किसी समाज के जीवन स्तर का प्रतिबिंब होता है बेहतर उपभोग से जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है क्योंकि लोग अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बेहतर वस्त्र , भोजन, आवास और सेवाओं का चयन करते हैं

<u>उपभोग के प्रभाव:-</u>

- आर्थिक असमानताएं:- उपभोग में असमानता समाज में आर्थिक अंतर को बढ़ा सकती है उच्च उपभोग वाले वर्ग के पास अधिक संसाधन होते हैं जबकि निम्न वर्ग के लोग अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं कर पाते इससे समाज में असमानताएं और सामाजिक तनाव बढ़ सकते हैं
- सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव:- उपभोग किसी समाज की सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक संरचना को प्रभावित कर सकता है उदाहरण के लिए विभिन्न समाजों में उपभोग के स्तर और प्रकार में अंतर होता है जो उनके जीवन शैली आदतों और परंपराओं को दर्शाता है।
- पर्यावरणीय प्रभाव - अत्यधिक उपभोग विशेष रूप से प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक उपयोग पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव डाल

Thank You